मध्यकालीन भारत
संपादक
इरफ़ान हबीब
10

'अज़ीम दफ़ाई क़िला' : शाहजहाँ की देहली का लाल क़िला : मुहम्मद वारिस के अलफ़ाज़ में उसका नक़्शा और उसके ढाँचे

सैयद अली नदीम रिज़वी

शाहजहाँ ने देहली में 1639 और 1648 के बीच इमारतों के निर्माण की जो परियोजना शुरू की थी, लाल क़िला और उसमें मौजूद स्मारक उसके मात्र घटिया मार्गदर्शक ही हैं। उपनिवेश-काल में हुई तोड़-फोड़ के कारण काफ़ी कुछ बदल चुका है, तब 1857 की पहली जंगे-आज़ादी के बाद विजेताओं ने क़िले के एक बड़े भाग को अन्दर से मिसमार करने का फ़ैसला किया और उनकी जगह अपने काम की फ़ौजी इमारतें खड़ी कर दीं। उससे भी पहले अकबर शाह दोयम और बहादुरशाह दोयम (ज़फ़र) जैसे परवर्ती मुग़लों के तहत बनाए गए या बदले गए ढाँचों के कारण शाहजहाँ की कल्पना का या बुनियादी ताना-बाना उलट-पलट चुका था।[1] लाल बलुआ पत्थरों की क़िलेबन्दियों के अन्दर बस एक बाग़ और कुछेक नदी किनारे के मंडपों को छोड़कर अब कुछ नहीं बचा है या क़िले की सतह पर दर्ज इस इबारत के कवि को संकेत देता हुआ नहीं लगता कि

अगर फ़िरदौस बर-रूए-ज़मीं अस्त
हमीं अस्तो हमीं अस्तो हमीं अस्त।

(धरती पर अगर कहीं स्वर्ग है तो यहीं है, यहीं है, यहीं है।)[2]

देहली के लाल क़िला के बुनियादी ताना-बाना का एक अन्दाज़ा हो सकता है जब हम अपना ध्यान उस दौर के प्राथमिक स्रोतों में मौजूद सूचनाओं की ओर ले जाएँ।

आधुनिक विद्वानों ने देहली के क़िले के अध्ययन पर पर्याप्त ध्यान दिया है। ऐसी अनेक रचनाएँ मौजूद हैं, जो वर्णनमूलक प्रकृति की हैं और देहली नगर के विभिन्न स्मारकों की सूची सामने रखती हैं।[3] कुछ और रचनाएँ क़िले के अन्दर के स्मारकों का विस्तार से वर्णन करती हैं या उसके वास्तुशास्त्रीय इतिहास की विवेचना करती हैं।[4] इनमें से अधिकांश रचनाएँ क़िले के मौजूदा ढाँचों और उनके वास्तुशिल्प का वर्णन करती हैं। लेकिन शाहजहाँ के काल से मौजूद ढाँचों को बाद में जोड़ी गई इमारतों से अलग दिखाने का प्रयास शायद ही वे करती होंगी। जिन दिनों उनकी परिकल्पना की गई होगी, उन दिनों वे कैसी दिखाई पड़ती, वे इसका वर्णन करने में भी नाकाम रही हैं। तमाम आधुनिक रचनाओं में सिर्फ़ अनीषा एस. मुखर्जी की रचना ही ऐसी है, जो बाद में जोड़े गए या गिराए गए ढाँचों के कारण शाही क़िले में आने-वाले 'रूपान्तरण' के तथ्य को समझने की कोशिश करती है। उन्होंने मूल प्रकार्यात्मक (सार्वजनिक और निजी) क्षेत्रों की पुनर्प्रस्तुति के लिए क़िले के अन्दर की इमारतों की दैशिक

और भौगोलिक स्थितियों और आयामों का एक विस्तृत और अर्थपूर्ण अध्ययन करने का प्रयास किया है। फिर भी देहली के क़िले और उसके स्मारकों से सम्बन्धित प्राथमिक स्रोतों में मौजूद सूचनाओं का इस्तेमाल करने में वे नाकाम रही हैं।[5]

लेकिन इस अनुपयोग के बावजूद शाहजहानाबाद के क़िले और उसकी इमारतों के बारे में ऐसी काफ़ी सूचनाएँ मौजूद हैं, जो शाहजहानी दौर से स्रोतों से निकाली जा सकती हैं। मगर उपरोक्त रचनाओं में से अधिकांश ने इन सूचनाओं को आमतौर पर अनदेखा किया है। इन समकालीन फ़ारसी स्रोतों में सबसे आसानी से उपलब्ध और सबसे मशहूर स्रोत अब्दुल हमीद लाहौरी की रचना 'बादशाहनामा' है, जो शाहजहानी दौर की पहली दो दहाइयों का वृत्तान्त है। चूँकि शाहजहानाबाद का क़िला वास्तव में शाहजहानी दौर की आख़िरी दहाई में पूरा हुआ था, इसलिए लाहौरी क़िले का विस्तृत विवरण दे पाने में असमर्थ हैं।[6] शाहजहाँ के पहले बीसवें शासनवर्ष पर अपना विवरण समाप्त करते हुए और बादशाह की मम्लकतवाले साम्राज्य की तफ़सीलें पेश करते हुए भी लाहौरी दरिया यमुना के किनारों पर अपने शानदार क़िले के साथ बसे उस नए राजधानी नगर का बस ज़िक्र ही करते हैं, जिसे शाहजहानाबाद कहा गया और जो 21वें शासनवर्ष में क़ायम हुआ और जहाँ 'अनेक फ़लकबोस (गगनचुम्बी) ऊँची-ऊँची इमारतें हैं, जिनका वर्णन वे आगे चलकर अपनी तीसरी जिल्द में करनेवाले थे।[7]

तामीर की तफ़सीलों और साथ में उसके अन्दर मौजूद अलग-अलग इमारतों का विस्तृत विवरण मुहम्मद वारिस ने दिया है, जिनको बादशाह ने मुक़र्रर किया था कि मौत के सबब लाहौरी का काम जहाँ छूट गया था वहाँ से वे बादशाह के शासन के वृत्तान्त को आगे बढ़ाएँ।[8] उनके वृत्तान्त को आमतौर पर लाहौरी की 'बादशाहनामा' की तीसरी जिल्द माना जाता है। बदनसीबी से वारिस की 'बादशाहनामा' अभी भी अप्रकाशित है या यूँ कहें कि विद्वानों के लिए अपेक्षाकृत अनुपलब्ध है।

दूसरा प्राथमिक फ़ारसी स्रोत, जिसमें कुछ हद तक वैसी ही जानकारियाँ मौजूद हैं, मुहम्मद सालिह कम्बोह की लिखी हुई 'अमले-सालिह' है, जिसे 'शाहजहाँनामा' भी कहा जाता है। सालिह लाहौरी और वारिस के यहाँ मौजूद जानकारियों को एक बड़ी हद तक अपने वृत्तान्त का आधार बनाते हैं।[9] लेकिन फिर उनके यहाँ वे तफ़सीलें नहीं हैं, जिनको हम वारिस के वृत्तान्त में देख सकते हैं। एक मिसाल लीजिए। सालिह ने बाग़ों और इमारतों के वे तमाम आयाम छोड़ दिए हैं, जो वारिस ने दिए हैं। 'बादशाहनामा' में मौजूद जानकारियों का संक्षिप्त रूप अपनी रचना 'शाहजहाँनामा' में शाहजहानी दरबार के कुलीन इनायत ख़ान ने पेश किया है। ग़ालिबन इस रचना को मूलतः मुलख़्ख़स कहा गया था।[10]

इन फ़ारसी स्रोतों के अलावा फ्रांकोई बर्नियर और टैवर्नियर जैसे यूरोपीय यात्रियों के वृत्तान्त भी हमारी जानकारी में काफ़ी कुछ इज़ाफ़ा करते हैं। शाहजहानी और औरंगज़ेबी दौर में ये लोग मुग़ल दरबार में आए थे।[11]

यहाँ हमने मुहम्मद वारिस की 'बादशाहनामा' के प्रासंगिक अंशों का एक अनुवाद पेश करने की कोशिश की है।[12] ये देहली में शाहजहाँ के क़िले की वास्तविक निर्माण-योजना को सामने लाने में मदद दे सकते हैं।

दिलचस्पी की बात यह है कि वारिस इस क़िले को हसीन गरदूँ, एक 'मज़बूत दफ़ाई' (प्रतिरक्षात्मक) क़िला कहते हैं, जिसके कंगूरे फ़तेहपुर सीकरी की पत्थर की खदानों से निकाले

गए लाल बलुआ पत्थर के बने थे। इसमें छह शाही दरवाज़े और इक्कीस बुर्ज थे, जिसमें से कुछ तो गोलाकार थे और दूसरे अष्टकोणीय थे। इसके अन्दर अधिकांश शाही महलों का रुख़ नदी की ओर झाँकते हुए पूरब की तरफ़ था। पश्चिम और दक्षिण की तरफ़ का हिस्सा 'सार्वजनिक' इमारतों और बाग़ों के लिए था। इसमें कम-से-कम दो बाज़ार थे–एक तो बाज़ारे-मुसक़्क़फ़ (छतदार बाज़ार) था, जिसमें एक चहारसुक़ था और दूसरा बाज़ारे-सरबाज़ (खुला हुआ बाज़ार) था। पहला बाज़ार अभी भी बाक़ी है, जबकि दूसरा पूरी तरह ग़ायब हो चुका है।

इस काल के वास्तुशास्त्रीय तत्वों पर भी काफ़ी जानकारी मिलती है। मिसाल के लिए मुहम्मद वारिस पसन्दीदा क़िस्मों के खम्भों और मेहराबों की जानकारी भी देते हैं–अष्टकोणीय (हश्त-पहल) खम्भे, जिनमें टोने (कुलाह) हों और बहुसतही (मर्ग़ूलीदार) मेहराबें। वे तहदार कटे हुए (तहनुमा) तालाबों का ज़िक्र भी करते हैं। सतह की सजावट के पसन्दीदा तरीक़ों को भी विस्तार से बताया गया है : पच्चीकारी (पीट्राड्यूरा), आईनाकारी (शीशे का काम) और गुजरात से लाए गए एक पत्थर से बने सफ़ेद प्लास्टर का इस्तेमाल। वारिस सम्भवत: अकेले ऐसे स्रोत हैं, जो हमें 'ख़ासकर सूबा गुजरात में निकाले गए पत्थर और उसके प्लास्टर (क़लई)' के बारे में बतलाते हैं, जिसका इस्तेमाल यह सफ़ेदी लाने के लिए किया जाता था। आज अधिकांश आधुनिक रचनाएँ 'शेल-प्लास्टर' की बात करती हैं, जिसका इस्तेमाल शाहजहानी इमारतों में बेदाग़ सफ़ेदी लाने के लिए किया जाता था। वारिस हमें बतलाते हैं कि शाहजहानी दौर में यह इस ख़ास पत्थर और उसकी क़लई को, जो 'गुजरात की ख़ासियत' थे, बड़ी मात्रा में लाने का हुक्म दिया गया था और उसका इस्तेमाल इमारतों की तामीर के सिलसिले में 'एक चलन और एक पसन्दीदा ज़रिया' बन चुका था। इस पत्थर और उसकी क़लई के इस्तेमाल से इन इमारतों के हाशिये (इज़ारा) 'मुख के प्रतिबिम्बकों (चेहरानुमा) में परिवर्तित हो जाते थे।' इसमें ख़सख़ाना (ख़स, andropogon muricalur, के पर्दों से ढके कमरों का, ताकि गर्मियों के दिनों में ख़स के गीला होने पर ये कमरे ठंडे और ख़ुशबू से लबरेज़ हो जाएँ), हौज़ख़ाना (हौज़ के किनारे बने कमरों), तम्बीख़ाना (गर्मियों के कमरों) का जो देहली के गर्म मौसम के लिए सबसे मुनासिब थे, ज़िक्र भी किया गया है।

दिलचस्प बात यह भी है कि अकबरी दौर की इमारतसाज़ी से सम्बन्धित रचनाओं की तुलना में वारिस शाही इमारतों के लिए एक अलग शब्दावली का इस्तेमाल करते हैं। मिसाल के लिए अगर शाही रिहाइश के कमरों के लिए अकबरी दौर में ख़िलवतकदा और ख़िलवतकद-ए-ख़ास शब्द चलते थे तो शाहजहानी दौर में आरामगाह, आरामगाहे-अक़दस, आरामगाहे-मुक़द्दस और महले-अक़दस शब्द आ गए। इसी तरह अकबरी दौर में अगर हरम को शबिस्ताने-इक़बाल और हरमसरा कहा जाता था तो अब इसे सिर्फ़ चुरत (पड़ाव) या मशकूए-मुअल्ला (स्त्रियों की रिहाइश)[13] कहा जाने लगा।

मुहम्मद वारिस, 'बादशाहनामा' (पांडुलिपि, वि ला, ओ, 1675, लन्दन)

टंकित प्रति, इतिहास विभाग का सेमिनार, पुस्तकालय, अलीगढ़, पृष्ठ 38–56 का अनुवाद

(38) 22 तारीख़ (रबीउल-अव्वल 1058 / 16 अप्रैल, 1648) के रोज़ ख़लीलुल्लाह ख़ान मेवात से आए और बादशाह के हुज़ूर में सज्दा किया। जुन (यमुना) नदी के साहिल पर बसे

राजधानी नगर देहली में शाहजहानाबाद के क़िले और उसकी फ़लकबोस इमारतों की तामीर पूरी हुई। आलीजाह ने अपनी मुबारक मौजूदगी से इसकी शान बढ़ाई।

शाही हुक्म के ऐन मुताबिक़ जुन (आगे से यमुना) नदी के साहिल पर एक शानदार महल बनवाने के लिए जगह चुनी गई, जो मुबारक मम्लकत का राजधानी नगर होगा। इस तरह दरिया के साहिल पर जमीन के एक टुकड़े पर एक मजबूत क़िला बनाने का हुक्म जारी हुआ और साथ में ऐसे दिलकश मनाजिल (सुन्दर इमारतें) भी, जिनके बीच से भी एक धारा बहती हो। उसके बहुत से रिहायशी ढाँचे मजकूरा दरिया की बग़ल में बनाए गए हैं। इन ढाँचों की बुनियादें भी क़िले की बुनियाद के साथ ही रखी गई।

इन ढाँचों का क़याम काफ़ी सोच-विचार के बाद राजधानी नगर देहली और दरिया के साहिल पर खड़ी नूनगढ़ (गढ़ी) के सामने की बीच की जगह में अंजाम दिया गया।

जहाँपनाह के हुक्म पर पाँच घंटों (साअत) के बाद जुमा की रात को, 25 ज़िलहिज्ज, 9 उर्दीबिहिश्त, शासनवर्ष 12, 1048 हिजरी (20 अप्रैल, 1639) के रोज़ क़िले की बुनियादों की निशानदेही की गई। इसके मेमार (वास्तुशिल्पी) उस्ताद अहमद और उस्ताद हामिद थे जो तामीर और इमारतसाज़ी के इल्म में माहिर थे। काम देहली के सूबेदार अब्दुल्लाह ख़ान फ़िरोजजंग के भाई के बेटे ग़ैरत ख़ान की निगरानी (सरकारी) में हुआ। बादशाह के मंजूर किए हुए मंसूबों के मुताबिक़ उनकी निगरानी में छह इमारतें शुरू की गई। (39)

क़िले की बुनियादें उस्ताद खोदुओं (बेलदारों) ने जुमा, 9 मुहर्रम, 23 उर्दीबिहिश्त (12 मई, 1639) की रात को 5 खगोलीय घंटों (साअत) और 12 मिनटों (दक़ीक़) के बाद रखीं। पूरी मम्लकत से उस्ताद दस्तकार और शिल्पी, संगतराश मय सादाकार, पच्चीकार और मम्बतकार (पत्थर के सादा काम करनेवाले, अन्दर तहें बनानेवाले और नक़्क़ाश) और राजगीर (मेमार) और बढ़ई (नज्जार) बुलाए गए और वे तामीर के काम में लग गए।

सुलतान फ़िरोज ख़लजी के ज़माने में परगना ख़िज़्राबाद के पास दरिया जुन (यमुना) से एक नहर निकाली गई थी और उसे तीस कुरोह दूरी पर स्थित परगना सफ़ेदों में शिकारगढ़ के पास तक लाया गया था, जहाँ पहले पानी की क़िल्लत हुआ करती थी। सुलतान की वफ़ात (मृत्यु) के बाद इस नहर के बुरे दिन आ गए और सार्वजनिक उपेक्षा के कारण यह सूखकर थक्का बन गई। अर्श आशियानी (अकबर) के ज़माने में देहली के सूबेदार शिहाबुद्दीन अहमद ख़ान ने इस नहर की मरम्मत कराई और फिर इसे एक बार कारआमद बना दिया, ताकि उसके आसपास की खेतिहर जमीनों की सिंचाई हो सके। अब इस नहर को उसके नाम पर 'शिहाब नहर' कहा जाने लगा। उसका दौर ख़त्म होने के बाद यह फिर इस्तेमाल से बाहर हो गई और अपने मूल (थक्कादार) रूप में आ गई। जब जहाँपनाह (शाहजहाँ) ने क़िले और उसके अन्दर दौलतख़ाना (महलों) की तामीर की ओर ध्यान दिया तो जरूरी हुक्म जारी किए गए कि ख़िज़्राबाद से लेकर सफ़ेदों तक, जो कि नहर का मूल रास्ता था, उसकी मरम्मत कराई जाए और उसके दोनों किनारों पर पुश्ते बनाएँ जाएँ और सफ़ेदों से लेकर ज़ेरे-तामीर क़िले तक– 30 शाही कुरोह की दूरी तक– पानी का अबाध प्रवाह सुनिश्चित करने के लिए सब कुछ किया जाए।

कथित साल (1048) के 11 जुमादुल-अव्वल (8 सितम्बर, 1639) को, यानी शुरुआत के बाद 4 महीने 2 दिन बाद ग़ैरत ख़ान को थट्टा का सूबेदार बनाकर भेज दिया गया और क़िला, उसके महलों और नहर की तामीर की निगरानी देहली की सूबेदारी समेत इलाहवर्दी

ख़ान को सौंप दी गई। मौसूफ़ ने अपना फ़र्ज़ शासनवर्ष 15 में 21 जुमादुद्दोयम तक अर्थात् 2 साल 1 माह और 11 दिन तक अंजाम दिया। उनके दौर में उनकी निगरानी में नदी की तरफ़ क़िले की (नींव की) दीवारें 2 गज़ उठाई गईं। जब उनका तबादला हुआ तो सूबे की ज़िम्मेदारी और साथ में इमारतों की तामीर और क़िले को मुकम्मल करने की ज़िम्मेदारी (40) मक़मात ख़ान को सौंप दी गई, जो मीरे-सामान के ओहदे पर क़ायम थे। काफ़ी लगन और मेहनत के ज़रिए उन्होंने शासनवर्ष 20 में काबुल को पैग़ाम भेजा जहाँ पर जहाँपनाह क़याम फ़रमा रहे थे और अर्जगुज़ारी की कि ऊँची इमारत (इमारते-आसमान-रिफ़अत), दौलतख़ाना-ए-ख़ासो-आम, दौलतख़ाना-ए-ख़ास, आरामगाह, पवित्र महल (महले-अक़दस), हम्माम, दौलतख़ाना-ए-ख़ास की तरफ़ का बाग़ और कुछ दूसरे ढाँचे मुकम्मल हो चुके हैं। बादशाह आलीजाह अपनी मौजूदगी से इन इमारतों की शान में इज़ाफ़ा करें। नजूमियों (ज्योतिषियों) के हिसाब से बादशाह के लिए महलों में दाख़िले की मुबारक साअत इस साल और अगले साल में पड़ती थी। काफ़ी सोच-विचार और अपने इल्म के तनक़ीदी (आलोचनात्मक) इस्तेमाल के बाद शाही नजूमियों ने आख़िरकार इस साल 24 रबीउल-अव्वल 3 फ़रवर्दीन यानी कि 1058 हिजरी की (18 अप्रैल 1648) की तारीख़ मुक़र्रर की। तयशुदा साअत नजूमियों के हिसाब से जो कि 16 और आधी घड़ी थी, बादशाह को बतला दी गई। तयशुदा वक़्त इतना ज़रूर था कि बादशाह काबुल से चलकर राजधानी नगर देहली पहुँच सकें।

जब मुबारक घड़ी आई तो बादशाह ने काबुल छोड़ा और राजधानी नगर (देहली) पहुँचे। और इस तरह जो कुछ छिपा हुआ था, वह अक़्लवालों पर ज़ाहिर हो गया। इस बुलन्द क़िले की, उसके महलों, उसके बुर्जों और फ़लकबोस मेहराबों की शान और उनके हुस्न का बयान कर पाना मुश्किल है...

... इस कायनात में कोई और इतना मज़बूत क़िला नहीं हो सकता ... ग़ालिबन आसमान तले कोई और ऐसा क़िला नहीं जो आकाश के सूरज और चाँद की तरह दमक रहा हो। इसकी इमारतें कल्पना से परे हैं।

(41) इसका हर कोना चमक मार रहा है और हर पहलू जन्नत के बाग़ों से भरा हुआ है। इसकी शक्ल फ़िरदौस जैसी है।

- (शे'र :) 'क्या कहूँ मैं इस इमारत की तर्ज़ के बारे में? यह कि उसके देखे से ही ज़बान तालू से चिपककर रह जाती है? इन इमारतों की सिफ़त इतनी बुलन्द है कि कोई उनके बयान की ताब नहीं ला सकता। उनकी कारीगरी ऐसी है कि ख़ुद कारीगर भी भौंचक्के हैं। मौजूदा दौर के मेमारों ने इस ढाँचे को इस तरह से सजाया है कि इसकी तर्ज़ सभी के लिए रश्क का सबब बनी हुई है।'

... (इसके बाद क़िले की इमारतों और दूसरों के मुक़ाबले उनके अनूठेपन के बारे में अतिशयोक्तियों-भरी तारीफ़ का एक पूरा अनुच्छेद आता है।)...

यह बुलन्द क़िला एक अनियमित अष्टभुज (मुसम्मने-बग़दादी) की शक्ल में है। इसकी लम्बाई 1000 और चौड़ाई 600 शाही गज़ है, इसके कंगूरे फ़तेहपुर के लाल पत्थरों के बने हुए हैं। दीवार के निचले हिस्से से इसके परकोटों की ऊँचाई 25 दिरा (गज़, क्यूबिट) है, उसकी बुनियादें 15 दिरा गहरी और 15 दिरा चौड़ी हैं और ज़मीन से 10 (दिरा) ऊँची हैं। क़िलाबन्द ज़मीन 6 लाख दिरा यानी कि अकबराबाद (आगरा) के क़िले का दोगुना है।

क़िले के पूरब के हिस्से में, जो दरिया यमुना से लगा हुआ है, पानी के घाट से इमारतों के चबूतरों की ऊँचाई 12 दिरा (42) है और दौलतख़ाना की सभी इमारतें– उत्तरी बुर्ज की इमारत से लेकर बाग़े-रूहपरवर और बाग़े-रुहअफ़ज़ा ('सावन' और 'भादो' मंडप) की इमारत, जिसे हयातबख़्श नाम दिया गया है, हम्मामे-अतहर, शाहमहल नाम के दौलतख़ाना-ए-ख़ास और आरामगाहे-मुक़द्दस और बुर्जे-टीला नाम के बुर्ज तक, इम्तियाज़-बख़्श नाम के महले-कलाँ (बड़ा महल) और ख़्वाबगाहे– (ख़ूबगाहे) अक़दस (शयनकक्ष) के लिए तय की गई इमारत तक, वहाँ से लेकर नव्वाब फ़लक जनाब बेगम साहिब (जहाँआरा बेगम) तक और इस दौर की मलिका (मलिक-ए-दौराँ) से जुड़ी दूसरी इमारतों तक, और बुर्जे-क़रीना और उत्तरी बुर्ज तक– सभी तरतीब से (इस ढंग से) बनी हुई हैं कि पूरब की तरफ़ नदी और सेहरा (परती ज़मीन?) है। पश्चिम की तरफ़ बाग़, सैर के चमन और नलकुंड हैं। ख़ूबसूरत और मशहूर नहरें-बिहिश्त, जोकि 4 दिरा चौड़ी है, उत्तर से आती है और ऊपर दर्ज इमारतों से लगकर बहती हुई दक्षिण की तरफ़ चली जाती है।

यह बुलन्द दफ़ाई (प्रतिरक्षात्मक) क़िला (हसीन गरदूँ), जिसकी क़द सातवें आसमान तक की जा रही है, 21 बुर्जों पर आधारित है : 7 गोलाकार (मदौर) और 14 अष्टभुज। इसमें 6 शाही दरवाज़े भी हैं। इन 6 में से दो तो बुलन्द दरवाज़े हैं, जिनकी मेहराबों के बीच एक वर्गाकार हिस्सा (निताक़े-चूज़ पैवस्ता) है। इनमें से एक दरवाज़ा तो राजधानी नगर (मुस्तक़र्रुल-ख़िलाफ़त) अकबराबाद की तरफ़ है और दूसरा दारुस्सल्तनत लाहौर की तरफ़ है। दो दरवाज़े, जो नदी की तरफ़ हैं, छोटे आकार और आयामोंवाले हैं। इनमें से एक दौलतख़ाना-ए-मुअल्ला (शाही निवास) के बाहर है और बड़ी हस्तियों (मर्दुने-कलाँतर) के इस्तेमाल और आने-जाने के लिए है। दूसरा शाहमहल के अन्दर है और बादशाह के लिए नदी के घाट तक जाने और शाही नावों में सवार होने के लिए है। एक और दरवाज़ा, जो उससे भी छोटा है, नदी की ओर है जो नूरगढ़ और इस बुलन्द क़िले के पश्चिम में बहती है। छठा दरवाज़ा नूरगढ़ और इस मज़बूत फ़लकबोस क़िले के बीच में बिस्त (?) की तरफ़ है।

नदी पूरब के पहलू में दीवारों और छज्जों को छूती है (जबकि) दूसरी दिशाओं में 25 गज़ चौड़ी और 10 गज़ गहरी एक खाई खोदी गई है। नहरें-बिहिश्त का पानी इसमें आता है और दो तरफ़ से यमुना नदी भी पानी डालती है।

राजधानी नगरवाले दरवाज़े से लेकर जिलौख़ाना-ए-दीवानख़ाना-ए-ख़ासो-आम के सामने तक एक छतदार बाज़ार (मुसक़्क़फ़ बाज़ार) है, जिसके अन्दर (वतीक़ा) एक चौड़ा अष्टभुज चहारसुक़ है, जिसकी मिसाल कहीं और नहीं मिलेगी। पूरे हिन्दुस्तान जन्नतनिशान जैसे मुल्क में कहीं और ऐसा बाज़ार किसी ने भी नहीं सुना है। हालाँकि ऐसे बाज़ार ईरान जैसे मुल्कों में मौजूद हैं, पर फिर भी अपनी तर्ज़ और सजावट के ऐतबार से वे इसके आसपास तक भी नहीं पहुँचते। और मुस्तक़र्रुल-ख़िलाफ़ा (आगरा) की तरफ़ के दरवाज़े से लेकर जिलौख़ाना-ए-दौलतख़ाना-ए-ख़ासो-आम के दरवाज़े तक एक बड़ा बाज़ार है, जो 40 गज़ चौड़ा है और उसके बीच से एक नहर बहती है। (43) इस सिरे के पास शाही अस्तबल (तवेला-ए-अस्पाने-ख़ास) है, जिसका बयान करने में मेरी ज़बान रुक जाती है जबकि मैं ख़ुद शाही महलों का तसल्लीबख़्श ढंग से बयान नहीं कर सका हूँ।

शानदार इमारतवाला शाही बुर्ज, जिसे गर्मियों के दौरान आठों तरफ़ से ख़सख़ाना बना दिया जाता है, 16 गज़ के क़तार (व्यास) में है और तीन मंज़िलों का, शानदार ढंग से बना

हुआ है। इसकी पहली मंज़िल ऊँचाई पर है और 10 दस ऊपर है। अन्दर से उसकी छत मेहराबी, मगर बाहर से सपाट है। यह इमारत ऊपर से नीचे तक सफ़ेद संगे-मरमर का बना हुआ है जबकि उसकी दीवारें कल्पनामय और रंगारंग नक़्शो-निगार (परचीन यानी कि पेट्रा ड्यूरा का काम) से सजाई गई हैं। इससे भी बड़ी बात यह है कि (इस ढाँचे में) चमकती हुई बेदाग़ सफ़ेद सतहें संगे-निहाली (संगे-बहलोली?) के इस्तेमाल के कारण हैं। पूरे मंडप और उसकी मेहराब की दिलखुश करनेवाली मन्सूबाबन्दी की गई है और उन पर सोना चढ़ाया गया है। मज़कूरा पत्थर ख़ासतौर पर सूबा गुजरात में निकाला जाता है और उसकी क़लई (प्लास्टर) जिस सतह पर लगाई जाती है, उसे काफ़ी नर्म और सफ़ेद बना देती है। इससे उसकी चमक बढ़ जाती है और उसमें आईना जैसी सिफ़त आ जाती है। पहले यह सिर्फ़ गुजरात की ख़ासियत थी, पर अब जहाँपनाह के ज़माने में जबकि शाही हुक्म से मौज और मस्ती का बाज़ार रोज़ाना गर्म रहता है, इस पत्थर और उसकी क़लई को बड़ी मिक़दार में यहाँ लाया जा रहा है। उसका इस्तेमाल एक चलन और एक पसन्दीदा ज़रिया बन चुका है : ज़्यादातर शाही इमारतें (या तो) सफ़ेद संगमरमर की हैं और उनमें आईनाकारी की सजावट है (जबकि तमाम)। दूसरी इमारतें संगे-निहाली की ऐसी ही क़लई से सजी हुई हैं।

इस हिस्से (शाह बुर्ज की पहली मंज़िल) में 8 गज़ चौड़ाईवाला एक मुसम्मन ख़ान (अष्टभुजी घर) है, एक चहारताक़ (एक-दूसरे से जुड़ी चार मेहराबोंवाली इमारत) है और नदी की तरफ़ अर्ध-अष्टभुज की शक्ल में दो नशेमन (रिहाइश?) हैं। उनके सामने की तरफ़ सफ़ेद मरमर की जालीदार खिड़कियाँ हैं, जो आँखों को सचमुच भारी लुत्फ़ देती हैं। पूरब से उत्तर की तरफ़, यानी की नदी की दिशा में, इनमें से हर मेहराबदार इमारत 4 दिरा की है। पश्चिम से दक्षिण की तरफ़ हरेक की लम्बाई 4 गज़, जबकि चौड़ाई 3 गज़ है।

इस मुसम्मन (अष्टभुज घर) के बीच में एक हौज़ है जिसका क़तर 3 दिरा हैं। पश्चिमी मेहराब में (अर्थात् रिहाइश की मेहराब में) एक आबशार (झरना) है, जिसकी चादर (प्रपात) डेढ़ दिरा चौड़ी और 15 तुमूज (?) की है। इस आबशार के नीचे मेहराबदार ताक़ें हैं, जिनमें सोने के फूलोंवाले सुनहरे गुलदस्ते रखे हुए हैं। सामने सफ़ेद संगमरमर से बना एक हौज़ है, जो साढ़े तीन दिरा लम्बा और अढ़ाई दिरा चौड़ा है। इस हौज़ से दूसरी मेहराब की तरफ़ मरमर से बना एक डेढ़ गज़ चौड़ा जलमार्ग है। ये हौज़, जलमार्ग और मेहराबें, ताक़ें और गुम्बद, सभी में अक़ीक़, कार्लेजियन, मोती जैसे रंगीन पत्थर और दूसरे कम क़ीमती पत्थर जड़े हुए हैं। यह ऐसी जगह जो जन्नत की ख़ुशबू से रची-बसी (मालूम होती) है और फूल-पत्तियों की तरह-तरह की नक़्क़ाशी से सजी हुई है, जिस पर साल-दर-साल लोग रश्क करते हैं। (44) नहरे-बिहिश्त का पानी इस आबशार से गुज़रने के बाद पश्चिमी मेहराबवाली इस हौज़ में गिरता है। यहाँ से यह जलमार्ग नहरे बुर्ज में मिल जाता है और टेढ़े-मेढ़े रास्तों से होकर अष्टभुज हौज़ (हौज़े-मुसम्मन) तक जाता है और फिर वहाँ से पूर्वी मेहराब के पास जाकर निकलता है। इसके नीचे आबशारे-चादरी है, जो नदी की ओर बह निकलती है। यह उन लोगों की ख़ुशियों को बहुत ही बढ़ाती है, जिनको इसे देखना नसीब होता है।

इस इमारत (शाह बुर्ज) की दूसरी मंज़िल एक पुख़्ता और पायदार ढाँचा है, जिसका क़तर 6 दिरा है। सामने 84 खम्भों पर टिका एक बड़ा सा ऐवान (मंडप) है।

इस इमारत की तीसरी मंज़िल पर एक नशेमन (निवास) है, जिसकी छत गुम्बदाकार है। यह अष्टकोणीय (हश्तबहरा) खम्भों पर टिकी है, जिसके ऊपरी सिरे (कुलाह, टोपे)

सफ़ेद मरमर के बने हैं और सोने का एक कलश वहाँ दिखता है, जो दो-साख़ता (?) है।

हयातबख़्श बाग़ जो पास में ही है, बिहिश्त के बाग़ का एक नमूना है। यह लम्बाई-चौड़ाई में 250 गज़ है, जिनमें से 225 गज़ तरह-तरह के स्वर्गिक फूलों (गुले रियाहीन) की बहुतायत से भरा पड़ा है। इसके बीच में एक हौज़े-कौसर (स्वर्ग का एक हौज़, जिसका क़ुरआन मजीद में ज़िक्र आया है), जैसा हौज़ है। यह 8 गज़ का है और उसकी शुद्धता के आगे दुनियावी हौज़ें शर्म के मारे छिप जाती हैं। इसकी सजावट और चमक-दमक सूरज की रोशनी को भी माँद करती है। इस हौज़ के बीच में 49 फ़व्वारे हैं, जिनसे पानी ऐसे निकलता है गोया आसमान में पानी से लदे हुए बादल हों।

इस हौज़ के किनारे-किनारे 112 दूसरे फ़व्वारे हैं। बाग़ की चारों रविशें (चहार ख़याबाने-बाग़) 20 गज़ चौड़ी हैं। इन रविशों के फ़र्श लाल पत्थर के बने हैं और बीच में 6 गज़ चौड़ा जलमार्ग है। इन चारों जलमार्गों में से हरेक में फ़व्वारों की तीन क़तारें हैं जिन पर सोने और चाँदी की पच्चीकारी की गई है और इसलिए ये बेहद मनमोहक लगती हैं।

ऐसे ही नज़र आनेवाले दो ढाँचे इस बाग़ के दक्षिण और उत्तरी दिशाओं के बीच में बनाए गए हैं। ये सफ़ेद मरमर के हैं और उनके बाड़े पच्चीकारी (पिट्रा ड्यूरा) से सजे हुए हैं। इन बाड़ों का ऊपरी हिस्सा ख़ूबसूरत और तरह-तरह की नक़्क़ाशी से सजा हुआ है। इन दोनों ढाँचों में से हरेक में 16 खम्भे हैं, जिनमें से हरेक ऊपर से नीचे तक ख़ूब-ख़ूब नक़्क़ाशीदार है।

इस हिस्से में दो, पूर्वी और पश्चिमी, ऐवान (मंडप) हैं, दो बँगले (ढालू छतवाले ढाँचे) हैं, एक सामने और एक पीछे की तरफ़ और एक नशेमन है, जो बँगलों वाले ढाँचों और मंडपों के बीच स्थित, 4 खम्भों पर खड़ा है। पूरा परिवेश ख़ूबसूरत और रुहआफ़ज़ा है। चारों दिशाओं में हर (इमारत?) के ऊपर सफ़ेद मरमर की चार चौखंडियाँ हैं जिन पर सोने के कलश लगे हुए हैं।

दक्षिणवाली इमारत के नशेमन के बीच में एक हौज़ है जो ठीक सफ़ेद क़ंदहारी मरमर से बने चश्म-ए-हैवाँ (?) की तरह चौकोर है। हर पहलू की लम्बाई 2 गज़ और चौड़ाई सवा दो गज़ है। बँगले के पीछे एक झरना (आबशार) है, जिसकी चादर सफ़ेद मरमर की है, 2 गज़ चौड़ी और डेढ़ गज़ ऊँची है। दीवारों की सतह पर अम्बशार से नीचे (45) ताक़ें हैं, जो उसी पत्थर को तराशकर बनाई गई हैं और इन पर भी पच्चीकारी की गई है। रोज़ाना दिन में सोने के गुलदस्तों में लगे सोने के फूलों से और हर रात सोने और चाँदी के शमादानों (आबरेज़ी) में लगी काफ़ूरी बत्तियों से ये ताक़ें सजी रहती हैं। इस प्रपात के सामने भी पत्थर का ही बना एक हौज़ है जो ढाई गज़ लम्बा और पौने दो गज़ चौड़ा है। इस हौज़ से लेकर उत्तर में उससे लगी इमारत तक 2 गज़ चौड़ा एक जलमार्ग है। यह जलमार्ग मज़कूरा मंडप के अन्दर हौज़ का चक्कर लगाता हुआ आगे बढ़ता है। यहाँ उसकी चौड़ाई आधा गज़ कम हो जाती है।

आबशार को नहरे-बिहिश्त से जोड़नेवाला एक जलमार्ग भी इसी हौज़ में आकर गिरता है। हौज़ का चक्कर लगाने के बाद यह जलमार्ग आगे जाकर उत्तर के हौज़ से आ रहे जलमार्ग से मिल जाता है। फिर वहाँ यह बाग़ के बीच में बह रहे परनाले से मिलने के लिए एक आबशारे-चादरी का रूप लेने से पहले 3 गज़ की चौड़ाई हासिल करके डेढ़ गज़ ऊँचाई पर जाकर बहता है।

ऊपर मज़कूर दोनों हौज़ हयातबख़्श (जीवनदायी) हैं, ख़ासकर ऐवानवाला हौज़ जिस पर क़ीमती पत्थरों को जमकर पच्चीकारी की गई है। यह पच्चीकारी इस तरह से की गई है कि यह सजावट उसे घनी हरियाली से भरे एक बाग़ की रविश का रूप दे देती है और इस उपवन (गुलज़ार) की हर पत्ती जीवन देती है और पेड़ की हर शाख़ पूरी तरह खिली हुई नज़र आती है।

उत्तरी हिस्से की इमारत के मंडप के बीच में सफ़ेद मरमर का एक हौज़ख़ाना है, जो लम्बाई-चौड़ाई में 4 गज़ 15 तुयूज़ (?) है और डेढ़ गज़ गहरा है। यह बेहद साफ़-सुथरा है, जिसमें चार प्रपात (आबशारे-चादरी) हैं, ताकि नहरे-बिहिश्त का पानी आ सके। हर प्रपात 4 गज़ चौड़ा है। हरेक के नीचे छोटी-छोटी ताक़ें हैं, जो दक्षिणी हिस्से की इमारत की ताक़ों जैसी ही हैं।

हौज़ का पानी इस इमारत की सतह के नीचे से बहने के बाद उस नहर में जा मिलता है जो बाग़ की रविशों (ख़ियाबान) के पास से बहती है। इस हौज़ख़ाना की सतह और ताक़ों की मेहराबों को काटकर उनकी बेहद ख़ूबसूरत ढंग से रंगीन पत्थरों से पच्चीकारी की गई है।

इसके अलावा एक और अम्बशार से भी पानी फूटकर निकलता है, जो इमारत के चश्मे के सामने है। यह तीन गज़ चौड़ा है, जबकि इसका प्रपात (चादर) डेढ़ गज़ नीचे गिरता है। यहाँ से पानी नहरे-ख़्यम्बाने-बाग़ (बाग़ की रविश से लगकर गुज़रनेवाला जलमार्ग) में जा मिलता है। पूरब की तरफ़ यह पूरा बाग़ दरिया से लगा हुआ है। इसकी चौड़ाई 26 गज़ है। बाग़ के सेहन से इमारत के चबूतरे तक, जो लाल पत्थर का बना है, वह डेढ़ गज़ है। लाल पत्थर की इमारत के अन्दर एक और तम्बीख़ाना (खुले अगवाड़ेवाला, गर्मियों का दालान) है, जो लम्बाई में 15 और चौड़ाई में 8 गज़ है। इसमें दो शाहनशीन (झरोखे) हैं, जिनका दर्जा फ़िरदौस जितना ऊँचा है। बीच में 4 गज़ लम्बा और (46) तीन गज़ चौड़ा एक हौज़ है, जिससे पानी फूटता रहता है। इन दोनों इमारतों में बड़े-बड़े मंडप (ऐवाने-कैवान) हैं, जिनमें पूरब की तरफ़ 5 मेहराबें हैं जिनके सामने नदी है और पश्चिम की तरफ़ बाग़ है। इमारत की लम्बाई के मुताबिक़ इनमें से हर एक की लम्बाई 30 दिरा है जबकि चौड़ाई 7 दिरा है। दोनों मंडपों के पत्थर के जंगले, हाशिये (इज़ारा) और इन दोनों मंडपों की बाहरी दीवारों को, जो कि सफ़ेद मरमर की हैं, दिलकश ढंग से उस्ताद कारीगरों द्वारा यूँ तराशा और सजाया गया है कि उनको देखनेवाला हर कोई दंग रह जाए। इन इमारतों के हाशियों को संगे-निहाली (संगे-बहतोली?) की क़लई से सफ़ेद किया गया है और उनको चेहरों का प्रतिबिम्बक (चेहरानुमा) बना दिया गया है। और इस बिहिश्ती इमारत की छतों और दीवारों पर उस्ताद मुसव्विरों (चित्रकारों) और नक़्क़ाशों ने तरह-तरह की तस्वीरें उकेरी हैं, जो मोती जैसे सूरज और चाँद, बिहिश्त के फूलों, तरह-तरह की रंगीन आकृतियों और प्रतिमानों से मेल खाती हैं। बिहिश्ती नक़्क़ाश और मुसव्विर मानी भी इन सजावटों को देखकर शर्मिन्दा है।

इस इमारत के हौज़ छिछले हैं और उनमें तहनुमा है, और उनके कोने क़ंदहारी मरमर के हैं, जो हरे रंग का होता है और उसमें एक लाल लकीर होती है, जिससे उनकी ख़ूबसूरती बढ़ जाती है। उनके बीच में स्वर्ग जैसे भारत (हिन्दुस्तान बिहिश्तनिशान) के सफ़ेद मरमर और मम्लकत के मुख़्तलिफ़ सूबों से लाए गए ऐसे ही दूसरे पत्थरों के टुकड़ों का इस्तेमाल किया गया है। इन हौज़ों के हर तहनुमा में छेद है, जिनसे सफ़ेद मरकर की फ़र्श से 2 दिरा नीचे

छिपे जलमार्ग का पानी फूटकर निकलता है। इस ऐवान के बीच से गुजरने के बाद यह पानी बाग़ की ओर बह निकलता है और चिंगारी की तरह आबशार से उड़कर निकलता है। इस झरने का प्रपात 2 गज़ का है। वहाँ से यह मज़कूरा ऐवान के बीच में सफ़ेद मरमर के हौज़ की ओर बहता है, जो परचीन की सजावट से भरपूर है और फिर यह पानी बाग़ की रविशों (ख़ियाबाने-नहर) के साथ के जलमार्ग की ओर बढ़ जाता है।

इस इमारत में लगा मरमर वह मरमर है, जो मकराना में निकाला जाता और वहाँ से यहाँ लाया जाता है। इस पत्थर को उसकी शान और सफ़ेदी के लिए जाना जाता है। शाही हुक्म से जब (9 गुना 4 गज़) का वर्गाकार हौज़, जो डेढ़ गज़ गहरा है, खोदा जा रहा था तब यह पत्थर मकराना से लाया गया था। वहाँ से दारुल-ख़िलाफ़त (राजधानी) शाहजहानाबाद की दूरी 200 कुरोह है। इतनी अधिक दूरी से लाकर यह पत्थर इस इमारत में लगाया गया है।

इस इमारत के चार ऊपरी कोनों पर चार चौखंडियाँ (बुर्जियाँ) हैं जो उत्तरी और दक्षिणी हिस्सों की चौखंडियों जैसी ही हैं। बाग़ वाली इमारत के चबूतरे से दक्षिण की तरफ़ एक दिलकश बँगला है, जो पूरी तरह सफ़ेद मरकर का बना है। इसकी लम्बाई 17 गज़ (47) और चौड़ाई 6 गज़ है, जबकि इसकी ऊँचाई 2 गज़ है।

इसके दोनों तरफ़ दो कोठर हैं, जो मज़कूरा बँगले को (दृष्टि से) छिपा देते हैं। इनमें बड़े-बड़े और सफ़ेद मरमर के ख़ूबसूरत खम्भे बने हैं। नहरे-बिहिश्त का पानी इस बँगले के पीछे से निकलता है और एक आबशार के रास्ते बाहर आता है, जो 3 दिरा चौड़ा है और जिससे पानी 2 दिरा नीचे गिरकर सामने बने एक हौज़ में चला जाता है।

ऐवान के बीच में, बँगले के सामने की तरफ़, पानी बहकर एक नाले में मिल जाता है, जो 4 दिरा चौड़ा है। यह नाला सफ़ेद मरमर से ढके एक बड़े से दालान में स्थित है। इसके दोनों तरफ़ सफ़ेद मरमर के ढाँचे हैं। इनमें 24 रुपहले झरने हैं और बीच में सफ़ेद मरमर के दो अष्टभुज हौज़ें हैं, जिनका क़तर 2 दिरा है।

दूसरी इमारत उत्तर की ओर, बँगले के हम्माम के पास है। वास्तुशिल्प के एतबार से इसे पहली इमारत जैसा ही बनाया गया है। यह बुनियादी तौर पर लाल पत्थर की एक इमारत है, जिस पर संगे-निहाली (संगे-बहतोली?) की क़लई है, जिससे उसकी सतह आईने जैसी हो गई है।

नदी की तरफ़ तीन मेहराबों वाली एक इमारत है, जो एक उठे हुए चबूतरे पर बनाई गई है। इसमें मरमर से ढका एक बाग़ है, जिसकी लम्बाई 20 दिरा है। यह इमारत और उसका बाग़ दुनिया-भर के लिए एक कशिश रखते हैं। इसकी दिलकश मेहराबें, मन मोहनेवाले हौज़, सुन्दर इमारतें और बिहिश्ती बाग़ पूरी दुनिया के लिए रश्क के सबब हैं।

(48) इस बिहिश्ती बाग़ के पश्चिम की तरफ़ एक और बाग़ है, जिसके बीच में लालमहल नाम से मशहूर एक पत्थरों की इमारत है। यह महल 16 दिरा लम्बा और 10 गज़ चौड़ा है। नहरे-बिहिश्त, जो इस जगह पर आकर 4 दिरा चौड़ी है, पूरब से इस बाग़ के ख़ियाबान में दाख़िल होती है और इस महल के बीच से होकर गुज़रने के बाद बलखाती हुई पश्चिम की ओर चली जाती है। अब हम इस इमारत की तर्ज़ का ज़िक्र करेंगे : चारों पहलुओं के बाहर की तरफ़ ऐवान हैं, जो 16 खम्भों पर टिके हुए हैं। नहर इस इमारत के आर-पार बहती है। एक-दूसरे के सामने दो दीवान हैं। इनमें से हरेक में 8 खम्भे हैं। इसके उत्तर की तरफ़ एक और बाग़ है, जो 116 दिरा गुणे 30 दिरा का है।

ऊपर दर्ज बाग़ों के अलावा एक और बाग़ भी है, जो 170 गज़ लम्बा और 130 गज़ चौड़ा है। उत्तर की तरफ़ इसकी इमारतों में से एक इमारत बाग़े-हयातबख़्श से मिली हुई है। इस बाग़ में कई एक पेड़ और अँगूरों की बेलें हैं और यही सबब है कि इसे अँगूर बाग़ कहा जाता है।

इस दौर की अनूठी इमारतों में शुमार किया जाता है दौलतख़ाना-ए-ख़ास, जिसके बीच में मुक़द्दस (पवित्र) शाहमहल है। इसकी लम्बाई 80 गज़ और चौड़ाई 26 गज़ है। यह बेहद अनूठी इमारतों में से एक है, जिसकी अज़्मत और ख़ूबसूरती के कारण उसका बयान कर पाना मुश्किल है।

बुनियादों से लें तो यह 34 गज़ लम्बी और 26 गज़ चौड़ी है। पूरी इमारत सफ़ेद मरमर की बनी है। इसके ऊपरी हिस्से की बनावट तमाम कल्पनाओं से परे है। जादूगर संगतराशों ने उसकी मेहराबों में से हरेक को एक ख़ास ढंग से तराशा है, जिससे उनमें जान पड़ गई है। यह इमारत सबके लिए रश्क का सबब बन गई है। यह एक डेढ़ गज़ के चबूतरे पर बनी है और इसके बीच से उत्तर से दक्षिण की तरफ़ एक नाला बहता है, जो 4 दिरा चौड़ा है। यह नाला जिस इमारत से होकर गुज़रता है, उसी की तरह सफ़ेद मरमर का है। इस इमारत में भी एक तबीख़ाना (गर्मियों का दालान) है, जो 15 गज़ लम्बा और 10 गज़ चौड़ा है। उसके सभी पहलुओं में तीन मेहराबें हैं (चश्म-ए-ताक़) हैं, जो खम्भों पर टिकी हुई (पायादार) हैं और बहुसतही (मुर्ग़लीदार) हैं। उनकी कुल तादाद 12 है।

इस इमारत के हिस्से में एक और खम्भोंवाला ऐवान है, जो 5 गज़ चौड़ा है। इस ऐवान के हर तरफ़ पाँच बहुसतही मेहराबें हैं। इस इमारत के हाशियों पर परचीन की पच्चीकारी के रूप में मूँगे और मोती तथा दूसरे क़ीमती पत्थर जड़े हुए हैं।

यह इमारत इतनी शानदार और अद्भुत है कि देखने आनेवाले सभी लोगों को मोहित कर देती है। बाड़ों पर भी सुन्दर नमूने बने हैं और नक़्क़ाशी की गई है। इस बाड़े के ऊपर संगे-लामी नाम के दमकते पत्थर लगे हुए हैं, जो सिकन्दर और ख़ुरशीदे-ख़ुसरों के आईने को जलन से मार दे! फलदार पेड़ों और ख़ूबसूरत किताबतशुदा पट्टियों के साथ-साथ यहाँ गुलाब, सतरंग और कुमुदिनी के फूल भी देखे जा सकते हैं। इस इमारत में सोने और चाँदी की दमक ऐसी है कि सूरज की चमक माँद पड़ जाए। (49) इस इमारत पर कुल 9 लाख रुपयों की लागत आई।

दौलतख़ाना-ए-ख़ास के पास में शाहमहले-मुक़द्दस है। नदी की तरफ़ पूरब दिशा में इमारत की कुर्सी है। बाड़ा सफ़ेद मरमर का है और वह भी ज़माने-भर में अपने ही जैसा है। इमारत के ऊपर चारों कोनों पर चार औखड़ियाँ (बुर्जियाँ) बनी हैं, जैसे कि बाग़े-हयातबख़्श की इमारतों में हैं।

- (शे'र :) ज़माने में कोई आँख नहीं, जिसने ऐसे सितारे देखे हों
  न ही तारीख़ की याददाश्त में ऐसा कोई शहंशाह हुआ है।

शाहमहल का दालान तीन तरफ़ 70 गज़ गुणा 60 गज़ का है। हर ऐवान, जो 5 दिरा चौड़ा है, लाल पत्थर का बना है। एक ऐवान शाहमहल के उत्तर में है। नहरे-बिहिश्त दक्षिण की तरफ़ से आकर इससे गुज़रती है। इसके दो कोनों (दर सरे-आन) पर दो कोठर हैं। उससे लगा एक गर्म हम्माम (गर्माबा) है, जो अपने ढंग, आकार और शिल्प में नज़ाकत और हुस्न से भरा हुआ है। इस आनन्दवास (नुज़हतकदा) के गर्मख़ाना की फ़र्श और उसके बीच के चबूतरे की चौहद्दी और शाहनशीन के अन्दर मौजूद हौज़, सभी सफ़ेद मरमर के बने हैं, जिसका भारी नज़ाकत के साथ इस्तेमाल किया गया है और जिसमें क़ीमती पत्थरों की पच्चीकारी है।

ठंडे हम्माम (सर्दख़ाना) के बीच में एक चौकोर हौज़ है, जिसके चारों कोनों पर सोने के (ज़रनाब) फ़व्वारे हैं, जो पानी फेंकते हैं। नहरे-बिहिश्त का एक नाला, जो चौड़ाई में एक दिरा है, इस इमारत की फ़र्श के नीचे से बहता है। फ़र्श, हौज़, जलमार्ग और हाशिए सभी गर्मख़ाना की ही तरह सफ़ेद मरमर के हैं। चारों तरफ़ तराश की नई महारतों का इस्तेमाल करके क़ीमती पत्थर जड़े गए हैं। इस हम्माम के लिबास बदलने के कमरे (रख़्तकन) के हाशिए भी सफ़ेद मरमर के हैं और उनमें अक़ीक़ और दूसरे रंगीन पत्थर जड़े हुए हैं।

नदी की तरफ़ की सतह दिलकश आईनाकारी से भरी हुई है और उसमें अलेप्पों के शीशे (शीशा-हा-ए-हलबी) जड़े गए हैं। आप उनमें उबलती हुई नदियों और वादियों को देख सकते हैं।

शाहमहल के दक्षिण में एक ऐवान है, जिसे उस्ताद नक़्क़ाशों और मुसव्विरों ने अपने हुनर का इस्तेमाल करके सुन्दर, अद्‌भुत और नायाब नमूने बनाए हैं। इस मनमोहक दोमंजिला इमारत में और आसपास के हिस्से में (दर सरे-ऐवान व दु युरत) पाँच गुणा पाँच की आईनाकारी की गई है। इसके हाशियों पर बड़े-बड़े आईने (मरायारी) इस तरह लगाए गए हैं कि एक जोड़ भी नज़र नहीं आता। इस इमारत की अज़्मत ज़ाहिर है, क्योंकि यह शहंशाह आलीजाह की ख़्वाबगाह (शयनकक्ष) है। यह पूरी तरह सफ़ेद मरमर की बनी है। इस ख़्वाबगाहे-मुक़द्दस का मन्सूबा (तरह) इस तरह से है : (50) बीच में ख़ाना-ए-तन्बी (गर्मियों का दालान) है, जिसकी लम्बाई 11 और चौड़ाई 6 दिरा है और जिसकी मेहराबों पर शाही हुक्म से सादुल्लाह ख़ान ने एक कताबा (शिलालेख) दर्ज करवाया था, जो उसकी शान बढ़ाता है :

"अल्लाह पाक़ है। कितने ख़ूबसूरत ये रंगीन महल (मंजिलहस्ते-रंगीं) और दिलकश रिहाइशगाहें (नशेमन-हस्ते-दिलनशीं) हैं। ये सातवें आसमान (बिहिश्ते-बरीं) का हिस्सा हैं। मैं यह भी कह दूँ कि बुलन्द हिम्मतवाले फ़रिश्ते (क़ुसियाने-हिम्मत बुलन्द) भी इसे देखने के ख़्वाहिशमन्द हैं, अगर दुनिया के मुख़्तलिफ़ हिस्सों और सिम्तों के बाशिन्दे उनकी वैसे ही परिक्रमा करना चाहें जैसे (वे) पुराने घर (बैतुल-अतीक़ यानी कि काबा) की परिक्रमा करते हैं तो यह मुनासिब ही होगा (रवा अस्त), या अगर दोनों जहानों के दर्शक (नज़ार गियाने-अनफ़ुओ-आफ़ाक़) उनकी बेहद शानदार दहलीज़ को दौड़कर चूमना चाहें जैसे कि (वे) हजरे-अशवद (काबा के काले पत्थर) को चूमते हैं तो यह मुनासिब ही होगा। इस अज़ीम क़िला की, जो स्वर्ग के महल (काख़े-गरदूँ) से भी ऊँचा और सिकन्दर की दीवार के लिए रश्क का सबब है, और इस दिलकश ढाँचे की, और बाग़े-हयातबख़्श की जो इन इमारतों के लिए वैसे ही हैं जैसे कि रूह जिस्म के लिए (चूँ रूह दर बदन) होती है और जैसे कि शमा महफ़िल के लिए (शमा दर अंजुमन) होती है, और पाक नहर की जिसका पाक-साफ़ पानी आँखवाले शख़्स के लिए, अक़्लमन्दों के लिए, गुप्त संसार (आलमे-ग़ायब) का पर्दा उठानेवाले (पर्दाकुशा) के लिए दुनिया को दिखानेवाले एक आईने जैसा है, और इन फ़व्वारों (आबशार-हा) की, जिनमें से हरेक आबशार प्रकाश का पंजा (पंच-ए-नूर) है, जो आसमान के बाशिन्दों से हाथ मिलाने के लिए बेताब है या दमकते हुए मोतियों की माला जैसा है, जो धरती के बाशिन्दों के इनआम के तौर पर आसमान से उतरा है, या इस हौज़ की, जिसमें ऊपर तक अमृत (आबे-हयात) भरा हुआ है और जो अपनी शुद्धता में रोशनी के लिए रश्क का सबब (रश्के-नूर) और सूरज का चश्मा है-इन सबकी शुरुआत का ऐलान

मुक़द्दस तख़्तनशीनी के 12वें साल में, बमुताबिक़ 1048 हिजरी में, 12 ज़िलहिज्ज के रोज़ (16 अप्रैल, 1639) को इनसानों में ख़ुशी की लहर दौड़ाते हुए किया गया था। जहान के शहंशाह, दुनिया के मालिक, इन बिहिश्ती इमारतों के बानी शिहाबुद्दीन मुहम्मद, राज़ी-ख़ुशी के दूसरे मालिक बादशाह शाहजहाँ के मुबारक पैरों की कुव्वत के बल पर, पचास लाख रुपयों की लागत से तख़्तनशीनी के 21वें मुबारक साल, बमुताबिक़ 1058 हिजरी, में 24 रबीउल अव्वल (18 अप्रैल, 1648) के रोज़ इसकी तकमील ने दुनिया के लिए आन-बान-शान के दरवाज़े खोले।''

दो जालीदार हिस्सों (दु सर तनाबी) के इर्द-गिर्द दो ख़ेमे (युरत) हैं, जिनमें से हरेक 7 दिरा लम्बा और 5 दिरा चौड़ा है। इन हिस्सों के सामने स्त्रियों की रिहाइश के हिस्से हैं, जिनमें से एक 23 दिरा चौड़े और सवा छह गज़ लम्बे ऐवान की शक्ल में है। यह दो मेहराबों की शक्ल में दो पहराशुदा हिस्सों में बँटा हुआ है। इनमें से एक तो स्त्रियों के हिस्सा (मशकू-ए-मुअल्ला) की तरफ़ है और दूसरा उत्तरी ऐवान की तरफ़ और शाहमहल के सामने है। उसके सामने सफ़ेद मरमर की एक जालीदार खिड़की है, जिसकी तारीफ़ उसे हर रात देखकर ही की जा सकती है। नहरे-बिहिश्त का पानी इसके नीचे से गुज़रता है।

पूरब के घिरे हुए हिस्से से लगा हुआ नदी की तरफ़ का बुर्ज, एक सुनहरी अष्टकोणीय मीनार है, जिसका सुन्दर बोलनेवाली ज़बानें भी बयान नहीं कर सकतीं। यह एक बिहिश्ती महल, पूरी तरह सफ़ेद मरमर का बना हुआ है। इसकी दीवारों और हाशियों को रंगीन पत्थरों और परचीन के कामों से तरह-तरह के नमूनों से सजाया गया है। (51) इसके कलश और कुलाह (टोपा) सब सोने के हैं। इसकी पाँच तरफ़ की मेहराबें, जो नदी की तरफ़ पड़ती हैं, सफ़ेद मरमर की हैं और उनमें जालीदार खिड़कियाँ बनी हुई (पिंजरा-हा-ए-संगे-मरमर) हैं। और इसके उत्तर के झरोखे का इस्तेमाल शहंशाह द्वारा झरोखा-दर्शन के लिए किया जाता है। अपनी शुद्धता और सज्जा में, नक़्क़ाशी व तिहलकारी चित्रकला और सोने के काम में शाहमहल के साथ कोई और इमारत इसकी तरह मेल नहीं खाती।

दौलतख़ाना-ए-वाला की इमारतों में सबसे शानदार इमारत वह महल है, जिसे इम्तियाज़ महल नाम से जाना जाता है। इसकी लम्बाई साढ़े 57 दिरा और चौड़ाई 26 दिरा है। इसमें एक ऐवान है, जो एकदम पुख़्ता और पायदार है। पाँच मेहराबों के आधार पर इसकी लम्बाई साढ़े 38 दिरा है, जबकि चौड़ाई 26 दिरा है और 3 मेहराबों पर आधारित है। इस तरह इसमें कुल 15 ख़ूबसूरत मेहराबें हैं, जिनमें से हरेक बहुसतही है। हाशियों पर नाज़ुक लेप (तनक पोशिश) है, जो सतह को बस छूती (मस) हुई है। इस पर नक़्क़ाशी की गई है। सभी खम्भों पर खुरतों के नीचे के हिस्से तक सफ़ेद मरमर की धूल का लेप (मुजल्ला अस्त) है। ऊपर छत तक यह लाल पत्थर की है, जिसे संगे-निहाली (संगे-बहतोली?) की क़लई से सफ़ेद और ताज़ा किया गया है। नीचे से ऊपर तक पूरी सतह सोने की तह से ढकी हुई है जिसका इस्तेमाल तरह-तरह से सतह को सजाने के लिए किया गया है।

और फिर तनबीख़ाना (गर्मियों का दालान) का दोसतही (दु सर) ऐवान है, जिसकी लम्बाई 11 और चौड़ाई 6 दिरा है और दो कोठर हैं, जिनमें से हरेक की लम्बाई 7 दिरा है और चौड़ाई 5 दिरा है। गर्मियों के इन दालानों की दीवारें और हाशिए और चार कोठर सफ़ेद मरमर के हैं। मेहराबों के चाप स्कन्धों को दिलकश आकृतियों से सजाया गया है। दीवारों के ऊपरी हिस्सों पर संगे-बहतोली की क़लई है और फिर उनकी आईनाबन्दी की गई है।

ऐवान की, जो साढ़े 7 गज़ का वर्गाकार है, बीच की मेहराब के बीच में सफ़ेद मरमर का एक हौज़ बनाया गया है, जिस पर बेहद ख़ूबसूरत पच्चीकारी की गई है। इस हौज़ के बीच में एक प्याला (कासा) है, जो बहुभुजी शक्ल का है। यह कासा भी उसी सामग्री से बना है और इस पर बारीक पच्चीकारी है।

(महल की ख़ूबसूरती और अज़्मत का) नशा चढ़ जाने के बाद नहरे-बिहिश्त ऐवाने-आरामगाहे-मुक़द्दस से बाहर आती है और उस नहर से मिलती है, जो इस महल के उत्तरी दालान में है। इस इमारत के अन्दर तीन गज़ बहने के बाद यह अपने आपको एक हौज़ में ख़ाली कर देती है। उसके बाद यह दक्षिण दिशा में तख़्त (सरीर) की तरफ़ बढ़ती है और उस इमारत में जाती है, जिसे आरामगाहे-मुअल्ला के तौर पर तय किया गया है और फिर दूसरी इमारतों से गुज़रने और दूसरी धाराओं और नहरे-बिहिश्त की शाख़ों से मिलने के बाद यह हौज़ के अन्दर बने कासा को भरती है। इस तालाब से एक और धार निकलती है, यह भी सफ़ेद मरमर की है और बलखाती हुई महल के बाग़ीचा (छोटे बाग़) की ओर बढ़ जाती है। इसकी तफ़सीलें यूँ हैं :

यह दो धारों में बँट जाती है। हौज़ में इसका कुछ पानी नहर के पानी से मिल जाता है और इमारत की निचली मेहराब के सामने के फ़व्वारे (आबशार) की चादर से बाहर आता है। इसका गिराव (इर्तिफ़ा) डेढ़ गज़ और चौड़ाई 3 गज़ है। (इस जगह) यह एक हौज़ में गिरती है, जिसे आबशार के नीचे ही बनाया गया है। इस आबशार में और जलमार्ग में भी, तरह-तरह के रंगीन पत्थर जड़े हुए (परचीन शुद) हैं। नदी की तरफ़ पड़नेवाली इस इमारत की मेहराबों और दरवाज़ों में आईना-ए-हलबी लगाया गया है। बीच की मेहराबें, जो सफ़ेद मरमर की हैं, बँगले की शक्ल में हैं। इसके बीच में एक दरीचा (छोटा दरवाज़ा) है, जो संग-पश्म (? ऊनी पत्थर) का बना है। इस तरह की मेहराबें बाग़ीचे की ओर पड़नेवाली जनाना रिहाइशगाहों में भी हैं, जहाँ बीच की मेहराबें बँगले की शक्ल में हैं और सतहें आईना-ए-हलबी से जगमग हैं। जैसा कि शाहमहल में है, इस ढाँचे के चारों कोनों पर सफ़ेद मरमर की चार चौखड़ियाँ हैं।

इस इमारत में उत्तर से दक्षिण की तरफ़ दालान की सतह सफ़ेद मरमर की है और शाही जनानागाहों (मुश्कवी) की तरफ़ दूसरी तीन दिशाओं में इसमें ऐवान है, जो 7 दिरा लम्बा-चौड़ा है। यह इमारत का बाग़ीचा लम्बाई में 177 और चौड़ाई में 115 दिरा है। बाग़ीचा के बीच में एक हौज़ है, जो लम्बाई में 50 दिरा और चौड़ाई में 7 दिरा है। इसमें 25 फ़व्वारे हैं।

हौज़ के पूरब और पश्चिम की तरफ़ सफ़ेद मरकर का एक जलमार्ग है, जिसमें 25 फ़व्वारे लगे हुए हैं। इसके अलावा एक बन्द बाग़ (बाग़े-महजरी) है, जो संग-मरमर-सुर्ख़ (लाल सुन्दर पत्थर) का बना हुआ है और जिसके रक़बे के ऊपर 2000 सोने की गुम्बदें हैं।

इम्तियाज़ महल के दालान के साथ लगी 4 चौखंडियाँ हैं, जो ख़सख़ाना (गर्मियों की ख़स लगी हुई रिहाइशगाह) की तरफ़ बनाई गई हैं : पहली आरामगाहे-मुक़द्दस के पश्चिम में है, दूसरी इम्तियाज़ महल की पश्चिमी दीवारों (हजरात) से लगी हुई है और सफ़ेद पत्थर की है। चौथी[14] आरामगाहे-अशरफ़ नाम की इमारत की बग़ल में है। यह लाल बलुआ पत्थर की है, जिस पर सफ़ेद मरमर की क़लई की गई है। इसे एक महल बना दिया गया है। इस महल के सभी कलश सोने के हैं।

इस इमारत के ढालान के पश्चिम में दौलतख़ाना-ए-ख़ासो-आम (सार्वजनिक सुनवाई की जगह) का एक झरोखा है। यह एक शानदार और उम्दा इमारत है, जो पूरी तरह सफ़ेद मरमर

की बनी हुई है। इसे 4 दिरा लम्बाई और 3 दिरा चौड़ाईवाले एक बँगले की तरह बनाया गया है। यह चार खम्भों पर खड़ा है और इसके पीछे एक पिश्ताक़ (मंडल / कमरा) है, जिसकी लम्बाई (दराज़गी) 7 दिरा और गहराई ढाई दिरा है। इन दोनों आधिकारिक इमारतों (मकाने-निज़ामत) की सजावट के लिए उसकी सतह पर तरह-तरह के पत्थरों की पच्चीकारी की गई है। उन पर कथात्मक विषयों (तमालील) वाले तरह-तरह के ख़ाके बनाए गए हैं।

तीसरे पहलू में पत्थर का एक झरोखा है, जिसे ज़ाफ़रान (केसर) और मुश्क से ख़ुशबूदार बनाया गया है और जिसकी अच्छी लगनेवाली वास्तुशिल्पी रूपरेखा है।

पिश्ताक़ (मंडल / कमरा) के पीछे एक कोठर (ख़ाना) है, जो 7 गज़ लम्बा और 5 गज़ चौड़ा है और जिसे संगे-बहतोली से सफ़ेद रंग दिया गया है। इसे सुनहरी तस्वीरों से सजाया गया है।

उसके सामने एक ऐवान है, जिसे इम्तियाज़ महल के बाग़ीचा में बनाया गया है। यह लाल पत्थर का बना है और संगे-बहतोली से सफ़ेद रंग दिया गया है। इसकी क़लईदार सतहों पर तस्वीरें बनी हुई हैं।

झरोखा-ए-अक़दस के सामने, जिस पर शाही सूरज हमेशा जगमगाता रहता है, एक ऐवान है, जो बहुत ही शानदार और बुलन्द (रफ़ीउल-बयान व आश्चर्यजनक) है। इसकी लम्बाई 67 और चौड़ाई 24 दिरा है। (53) और इसमें 6 खम्भों पर टिकी 28 प्यालादार मेहराबें हैं। ऊपर से नीचे तक यह लाल पत्थर का बना है, जिसे संगे-मरमर की क़लई से सफ़ेद बना दिया गया है। इसके शिखर पर सुनहरे हरफ़ (इबारत) इसे और जगमग बनाते हैं। इसके तीन तरफ़ रूपहले जंगले हैं और इस पर सुनहरी गुम्बदें हैं। ये भी इस इमारत को एक बेमिसाल जगह बना देती हैं।

यह शानदार और बिहिश्त जैसा ऐवान एक चबूतरे पर बना है, जो 104 दिरा लम्बा और 60 दिरा चौड़ा है। उसके पास में लाल पत्थर का एक जंगला (महजर) है, जिसे बेहद दिलकश ढंग से तराशा गया है। उसके ऊपर एक सुनहरी गुम्बद है। इस शानदार इमारत का दालान 210 दिरा लम्बा और 160 दिरा चौड़ा है। इसके अन्दर ऐवान हैं, जो इसमें रहनेवाले दरबार के ख़ादिमों के लिए बहुत ही पसन्दीदा, दिलख़ुश और रूहअफ़ज़ा हैं।

पश्चिम, उत्तर और दक्षिण में लाल पत्थर के, बड़ी चौड़ाई वाले दरवाज़े हैं। पश्चिम के दरवाज़े पर इसकी अज़मत की तारीफ़ में एक इबारत दर्ज है। इसकी ख़बरें आसमान तक पहुँचती हैं। इसके ऊपर एक नक़्क़ारख़ाना है। उससे निकलनेवाली आवाज़ें उनके कानों तक भी पहुँचती हैं, जो स्वर्ग में रहते हैं।

इस दरवाज़े के सामने चौके-जिलौख़ाना (सामने के दालान का चौक) है, जो 200 गज़ लम्बा और 140 गज़ चौड़ा है। इस चौक से तीन सड़कें निकलती हैं। पश्चिमी सड़क छतदार बाज़ार (बाज़ारे-मुसक़्क़फ़) से गुज़रकर दारुस्सल्तनत लाहौर की तरफ़ क़िले के दरवाज़े (लाहौरी दरवाज़ा) तक जाती है। उत्तरी सड़क शाही अस्तबलों (अस्तबले-ख़ास) से गुज़रती है और नूरगढ़ की तरफ़ खुलनेवाले दरवाज़े से मिल जाती है। दक्षिणी सड़क मुस्तक़रुल-ख़िलाफ़त अकबराबाद (आगरा) की तरफ़ (खुलनेवाले दरवाज़े) के पास के खुले बाज़ार (बाज़ारे-सरबाज़) से मिलती है।

नहरे-बिहिश्त से एक जलमार्ग निकलता है, जो 4 दिरा चौड़ा है और खुले अस्तबल (अस्तबले-सरबाज़) से होकर गुज़रता है। यह ऊपर दर्ज चौक के बीच से गुज़रता हुआ दक्षिण की तरफ़ बढ़ता है और क़िले की ख़न्दक़ में गिरता है।

आगे की तरफ़ (सड़क के? / या अकबराबाद दरवाजे की दिशा में?) दूसरी इमारतें हैं, जिनमें एक तो नव्वाब बेगम साहिब (जहाँआरा बेगम) का महल है। यह खम्भों पर टिकी पाँच मेहराबोंवाला एक ऐवान है, जिसकी लम्बाई 33 गज़ है। यह 19 गज़ चौड़ा है और इसमें कुल 15 मेहराबें हैं। इसके पीछे की तरफ़ तनबीख़ाना (गर्मियों का दालान) है, जो 18 दिरा लम्बा और 8 दिरा चौड़ा है। इसमें दोनों तरफ़ दो-दो कमरे हैं, जिनमें से हरेक कमरा 8 गज़ गुणा 6 गज़ है। पूरी इमारत के हाशिए मरमर के हैं, जिन पर संगे-बहतोली का इस्तेमाल किया गया है, ताकि ऊपरी सतह सफ़ेद हो जाए और उस पर मुसव्विरी (चित्रकारी) आसान हो जाए। सफ़ेद मरमर का एक जलमार्ग इस इमारत से होकर गुज़रता है और यह 3 गज़ चौड़ा है। इसके बीच में एक हौज़ है, जो मरमर का ही है। इस हौज़ से एक धारा निकलती है और इमारत के सामने पहुँचने के बाद फ़व्वारे (आबशोर-चादरी) का रूप ले लेती है।

इस महल के दालान में एक वर्गाकार बाग़ीचा है, जिसका माप 67 दिरा है। इस बाग़ के बीच में 25 दिरा क़तर (व्यास) वाला एक अष्टकोणीय हौज़ है, जिसमें 25 फ़व्वारे हैं। (54)

इस इमारत में दक्षिण की तरफ़ एक लाल पत्थर का बुर्ज है जो शाहबुर्ज की तरह का ही बना हुआ है। बेगम साहिब के महल का बाग़ 82 दिरा लम्बा और 60 दिरा चौड़ा है। इस बाग़ के पूर्वी पहलू के बीच में लाल पत्थर का एक ऐवान है। इसका रुख़ दरिया जुन (यमुना) की तरफ़ है। दूसरी इमारतें भी हैं, जिनमें दूसरी ख़वातीन और शाही हरम की सदस्याएँ रहती हैं। यह हिस्सा ख़वासपुरा का है, जिसकी तफ़सील में मैं नहीं जाऊँगा।

इन इमारतों पर कुल 60 लाख रुपयों का ख़र्च आया है। शाही महलों (नशेमन-हा-ए-ख़ास) पर 28 लाख रुपए ख़र्च हुए हैं, जिनकी तफ़सील इस तरह है : शाहमहल, उसकी
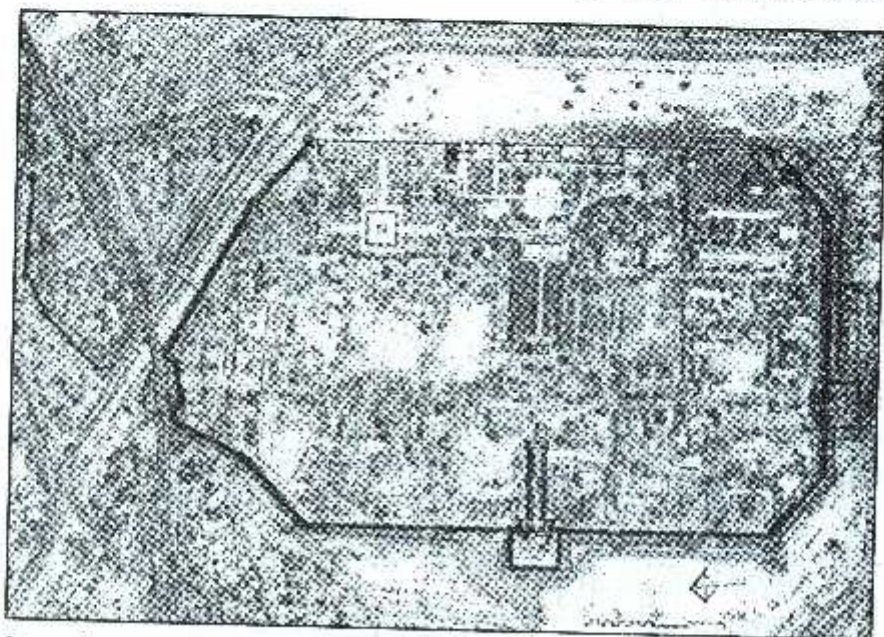
चित्र-1 : क़िला शाहजहानाबाद की बाक़ी बची इमारतें (© अनीशा एस. मुखर्जी)
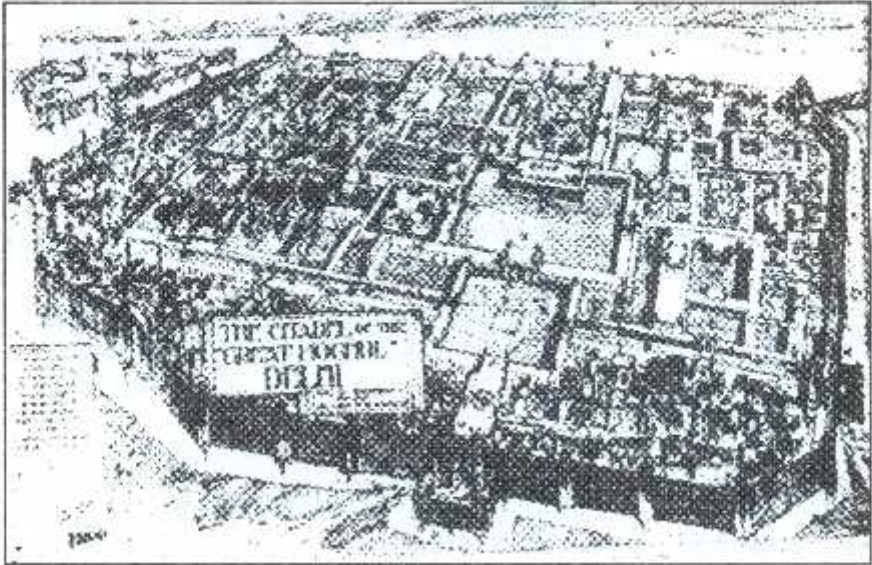
चित्र-2 : क़िले की इमारतें, 1850 के आसपास (स्रोत : सैंडरसन, 1931-32)
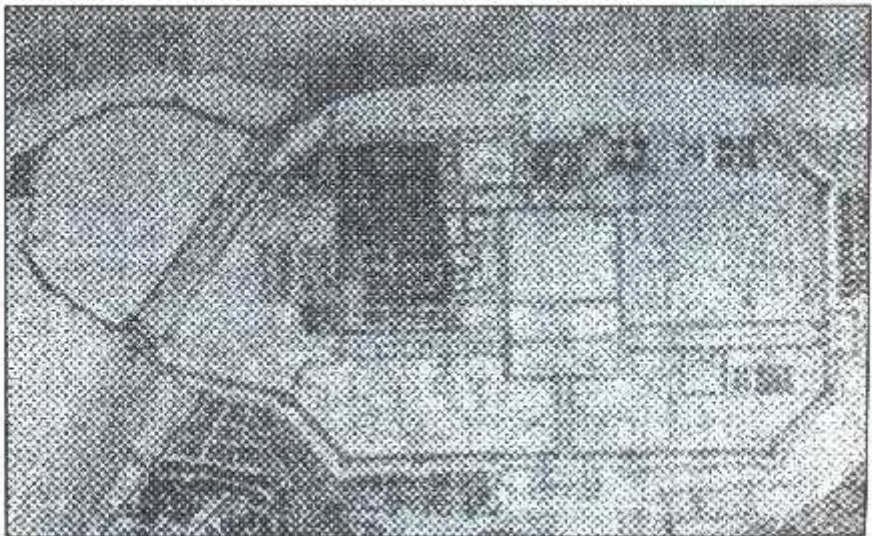
चित्र-3 : शाहजहानाबाद के नक़्शे की तफ़सीलें, 1850 के आसपास (X/1659 ओ आई ओ सी, ब्रिटिश लाइब्रेरी, लन्दन)
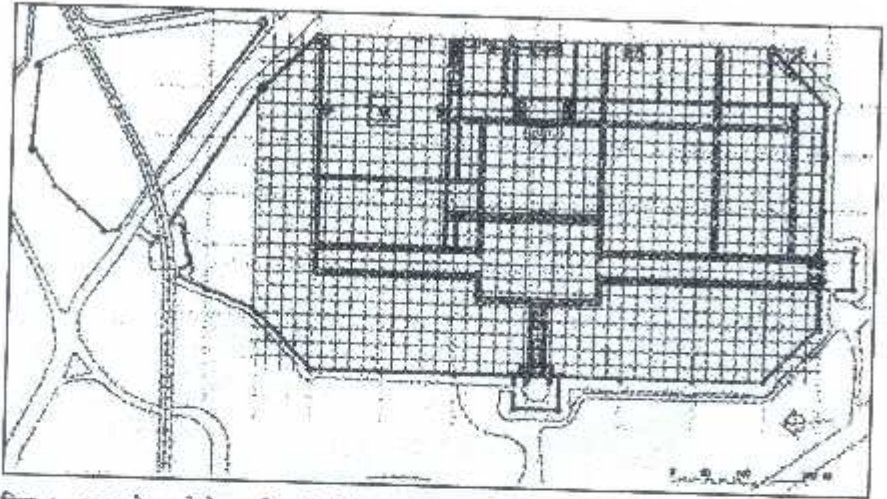
चित्र-4 : 1850 के नक़्शे के मुताबिक़ क़िले के विभिन्न हिस्से (© अनीषा एस. मुखर्जी)

छतें और उससे जुड़ी इमारतों पर 14 लाख, इम्तियाज़महल, आरामगाह और इससे जुड़ी इमारतों पर 5 लाख 50 हजार, दौलतख़ाना-ए-ख़ासो-आम पर 2 लाख 50 हज़ार, बाग़े-हयातबख़्श और हम्माम पर 6 लाख रुपए, बेगम साहिब और दूसरी बेगमात के महलों पर 7 लाख, क़िले के अन्दर के बाज़ारों और चौकों समेत दूसरी इमारतों और शाही कारख़ानों पर 40 लाख, ख़न्दक़ समेत क़िले पर 21 लाख। किले के लिए मरमर पत्थर 100 कुरोह की दूरी से लाया गया...''

सन्दर्भ और टिप्पणियाँ

1. मिसाल के लिए सैयद अहमद ख़ान, 'आसारुस्सनादीद', पुनर्मुद्रण : नई देहली, 1956 (अंग्रेज़ी अनुवाद : आर. नाथ, 'मान्यूमेन्ट्स ऑफ़ डेलही : आर्किटेक्चरल एंड हिस्टोरिकल', नई दिल्ली, 2010); ज़फ़र हसन, 'मान्यूमेन्ट्स ऑफ़ देलही : लास्टिंग स्प्लेंडर ऑफ़ द ग्रेट मुग़ल्स एंड अदर्स', तीन जिल्दों में, जिल्द एक, नई दिल्ली, 1997 (ए लिस्ट ऑफ़ मान्यूमेंट्स ऑफ़ द डेलही सर्किल', संपादक : जे.ए. पेज, ए.एस.आई., 1916 का पुनर्मुद्रण है); कार स्टीफ़ेन, 'द आर्कियोलॉजी एंड मान्यूमेन्ट्स रिमेन्स ऑफ़ देहली', पुनर्मुद्रण, इलाहाबाद, 1967 देखें। मुग़लों की देहली के एक सामान्य इतिहास के बारे में अन्य के अलावा स्टीफ़ेन पी. ब्लेक, 'शाहजहानाबाद : द सावरेन सिटी इन मुगल इंडिया', 1639-1739, देहली, 1993; शमा मित्र चिनाय, 'शाहजहानाबाद : द सिटी ऑफ़ देहली 1639-1857', नई देहली, 1998 देखें।
2. ज़फ़र, 'मान्यूमेन्ट्स ऑफ़ डेलही', पूर्वोक्त, एक, पृष्ठ 19
3. ऊपर टिप्पणी 1 देखें।
4. मिलान के लिए गार्डन सैंडरसन, 'देहली, फ़ोर्ट : ए गाइड टू इट्स बिल्डिंग्स एंड गार्डेंस', एएसआई प्रकाशन, कलकत्ता, 1914; लुइज़ा निकल्सन, 'द रेड फ़ोर्ट देहली', लन्दन, 1989 देखें। वास्तुशास्त्रीय ब्योरों के लिए जेम्स फ़र्ग्युसन, 'हिस्ट्री ऑफ़ इंडियन एंड ईस्टर्न आर्किटेक्चर', संशोधन एवं सम्पादन : जॉन बर्गेस, लन्दन, 1910 (पुनर्मुद्रण : देहली, 1994), पर्सी ब्राउन, 'इंडियन आर्किटेक्चर (इस्लामिक पीरियड)', बम्बई, 1964; एबा कोश, 'मुगल आर्किटेक्चर : ऐन आउटलाइन ऑफ़ इट्स हिस्ट्री एंड डेवलपमेन्ट (1526-1858)', म्यूनिख़, 1991 (पुनर्मुद्रण : नई देहली, 2001); कैथरीन ऐशर, 'आर्किटेक्चर ऑफ़ मुग़ल इंडिया', नई देहली, 1995 देखें।

5. अनीशा शेखर मुखर्जी, 'द रेड फ़ोर्ट ऑफ शाहजहानाबाद', नई दिल्ली, 2003
6. अब्दुल हमीद लाहौरी, 'बादशाहनामा', दो जिल्दों में, सम्पादन : मौलाना कबीरुद्दीन अहमद और अब्दुर्रहीम, बिब्लियोथिका इंडिका, एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल, कलकत्ता, 1868
7. लाहौरी, पूर्वोक्त, दो, पृष्ठ 710
8. मुहम्मद वारिस, 'बादशाहनामा', पांडुलिपि, ब्रिटिश लाइब्रेरी, ओ 1675, लन्दन; टंकित प्रति : इतिहास विभाग सेमिनार लाइब्रेरी, अलीगढ़, पृष्ठ 38-56; 'बादशाहनामा' लिखने का काम मूल रूप से मुहम्मद अमीन क़ज़वीनी को सौंपा गया था, जिन्होंने शाहजहानी दौर की पहली दहाई का इतिहास लिखा। लेकिन लगता है उनके 'बादशाहनामा' को शहंशाह ने नामंज़ूर कर दिया और इसे उसने फिर लाहौरी को सौंपा।
9. मुहम्मद सालिह कम्बोह, 'शाहजहाँनामा', सम्पादन : जी यज़दानी और वहीद कुरैशी, लाहौर, 1972, जिल्द तीन, पृष्ठ 18-40
10. इनायत ख़ान, 'द शाहजहाँनामा', अनुवाद : ए.आर. फुलर, सम्पादन और पूर्णता: डब्ल्यू.ई. बेगली और जेड.ए. देसाई, देहली, 1990, पृष्ठ 403-04, 406-09
11. फ्रांस्वाँ बर्नियर, 'ट्रैवेल्स इन मुग़ल इम्पायर, एडी 1656-68, अनुवाद : ए कांस्टेबिल, नई दिल्ली, 1996; ज्याँ बापतिस्ते टैवर्नियर', 'ट्रैवेल्स इन इंडिया', दो जिल्दों में, अनुवाद : वी. बाल, सम्पादन : डब्ल्यू. क्रुक, लन्दन, 1925
12. मुहम्मद वारिस, 'बादशाहनामा', पूर्वोक्त, पृष्ठ 38-56
13. शाब्दिक अर्थ है एक महल, जहाँ फ़ारस का बादशाह ख़ुसरो परवेज़ अपनी पत्नी शीरीं के साथ रहता था। इस शब्द का प्रयोग किसी महल के ज़नाना हिस्सों के लिए किया जाता है।
14. टंकित प्रति उछलकर दूसरे से चौथे पर चली जाती है। 'क्या यह टंकण करनेवाली की ग़लती' है? या स्वयं पांडुलिपि में कुछ हिस्से ग़ायब होने के कारण है!